राधा रहस्य

लेखक-
सन्तोष कुमार
९८३७३८०५३१

प्रकाशक
प्राच्य साहित्य परिषद्
११/८३-ए, तीसरी मंजिल
साबुन कटरा, आगरा-२८२००३

परिवर्धित संस्करण-
पौष-पूर्णिमा २०७१
जनवरी २०१५

मूल्य-६/-

दो शब्द

धर्म के नाम पर जितने आयोजनों का प्रचार आजकल हो रहा है, उतना सम्भवत: पहले नहीं देखा गया। गली-कूचों में मन्दिरों की भरमार है और यहाँ सभी वर्गों की भीड़ देखने को मिल जायेगी। इस अर्थ में ये सभी धार्मिक हैं। इतना होते हुए भी अपराध, हत्या, बलात्कार, अपहरण और लूटपाट के कृत्य बढ़ते जा रहे हैं। आखिर इसका कारण क्या है?

विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि जहाँ पहले चरित्रवान व्यक्तियों की प्रतिष्ठा होती थी, आज उसका उलटा हो रहा है। इतना ही नहीं हमारे पूर्वजों के यशस्वी चरित्र को कलंकित रूप में प्रस्तुत करने के प्रयास भी नित्यप्रति किये जाते रहे हैं, वह भी धर्म की आड़ में। ऐसा करने वाले भी अपने को धर्म का ठेकेदार मानते हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि अनजाने में ही लोग अधर्म की ओर बढ़ रहे हैं। जब धर्म का झण्डा लेकर चलने वाले ही गुमराह हों तो सही राह कौन दिखायेगा।

प्रस्तुत पुस्तक में हम यह दिखाने जा रहे हैं कि किस प्रकार पुराणकारों ने महापुरुषों के निर्मल चरित्र पर कलंक लगाने का कार्य किया है। राधा का चरित्र भी इसका उदाहरण है जिसे भगवान कृष्ण के साथ सम्बद्ध किया गया हें। इस पुस्तक के प्रणयन में हमें कई लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों की कृतियों का अवलम्बन लेना पड़ा हैं जिनके प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

अपने वक्तव्य को अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से पृष्ठ संख्या बढ़ाकर कुछ और प्रसंग जोड़े हैं, जो विषय को देखते हुए अपेक्षित थे। हम आशा करते हैं हमारे इस प्रयास से जनमानस में अपने मान्य ग्रन्थों की वास्तविकता को तथ्यपरक दृष्टि से देखने की भावना को बल मिलेगा।

राधा रहस्य

कृष्णभक्ति के नाम पर श्री मद्‌भागवत कथा का प्रचलन यदा कदा होता रहता है और कथावाचक महोदय दो वाक्यों के बाद ही कह उठते हैं बोलो राधे-राधे। राधे-राधे शब्द अब एक अभिवादन के रूप में भी प्रचलित हो रहा है। यह सब देख-सुन कर मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि क्या वास्तव में कृष्ण का प्रेम-सम्बन्ध किसी राधा नाम की स्त्री से था। कृष्ण और राधा का जो वर्णन हमारे कथावाचक भागवत-कथा के अन्तर्गत बड़े ही रससिक्त भाव से करते हैं, क्या वह सत्य है? संदेह का कारण है रुक्मिणी। कृष्ण का विवाह रुक्मिणी से हुआ, उसे कृष्ण से उपेक्षा क्यों मिली? उसने तो शिशुपाल को तिरस्कृत करके कृष्ण से विवाह किया था। इसी कारण शिशुपाल कृष्ण का शत्रु बन गया। तब जानना चाहिए कि आखिर राधा को क्यों इतनी प्रमुखता दी जा रही है? इसी जिज्ञासा ने सत्यता को जानने के लिए प्रेरित किया। एक छोटी सी जिज्ञासा कभी-कभी किसी आश्चर्यजनक सत्य को उद्‌घाटित कर देती है। ऐसा ही हुआ।

महाभारत – कृष्ण के जीवन से सम्बन्ध रखने वाला सर्वप्रथम ग्रन्थ महाभारत ही है। इस बृहद्‌काय ग्रन्थ में कृष्ण की प्रेमिका राधा का कोई संकेत मात्र भी नहीं है। यदि राधा नाम है तो कर्ण को पालने वाली माता का है जिसके आधार पर कर्ण को 'राधेय' कहा जाता था।

हरिवंश पुराण –इसमें कृष्ण के वंश का सविस्तार वर्णन है, इसे महाभारत का परिशिष्ट कहा जाता है, इसमें भी राधा को खोजना व्यर्थ है।

विष्णु पुराण– यह पुराण विष्णु को प्रमुख देवता मान कर लिखा

गया है। कृष्ण की अन्य लीलाओं का वर्णन होने पर भी इसमें राधा नहीं है।

श्री मद्भागवत महापुराण – वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ यही पुराण है। जो लोग भागवत को पढ़ते हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि भागवत में कहीं भी राधा का नाम नहीं है। भागवतकार ने भगवान कृष्ण के पावन चरित्र पर अनेक प्रकार के लांक्षन लगाये हैं और उन्हें लम्पट, दुराचारी, कामुक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। गोपियों के साथ रासलीला के कामुक वर्णन और उनके चीर हरण का वर्णन तो है किन्तु राधा नदारद है। तब यह राधा कहाँ से आ गई? इसका सीधा अर्थ है कि भागवत के लिखे जाने तक कृष्ण के प्रसंग में राधा के नाम की कल्पना नहीं हुई थी। यह एक आश्चर्यकारी प्रसंग है कि भागवत में राधा का नाम न होने पर भी भागवत के कथावाचक राधा का नाम इस प्रकार प्रचारित करते हैं मानो उसका अस्तित्व वास्तव में था।

राधा कौन थी? – शीर्षक लेख (धर्मयुग ३ दिसम्बर १९६१) के अनुसार **पं. माखन लाल चतुर्वेदी** के मार्ग दर्शन में **'सूर काव्य में राधा तत्व'** पर **कुमारी जमीला कुरैशी** ने खोज कार्य किया था। जिसके परिणाम स्वरूप वे इस निर्णय पर पहुंचीं कि 'प्रारम्भ के ग्रन्थों में कृष्ण की प्रेमलीलाओ का वर्णन तो है पर भागवत पुराण तक में राधा का कोई उल्लेख नहीं है।' उनके अनुसार ईसा की प्रथम शती में प्रतिष्ठानपुर के राजा 'हाल' (सातवाहन) की गाहा सत्तसई में प्रथमत: राधा का उल्लेख मिलता है। (आठवीं शताब्दी) **भट्ट नारायण** कृत **'वेणी संहार'** नाटक में नान्दी श्लोक में सर्वप्रथम राधा का वर्णन कृष्ण की प्रियतमा के रूप में मिलता है। बाद में कवि जयदेव, विद्यापति, सूरदास, चण्डीदास आदि के काव्यों में राधा-कृष्ण प्रसंग प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। एक नक्षत्र (विशाखा) का नाम भी राधा है।

एक अन्य लेख **लावण्यप्रभा राय** का भी धर्मयुग ३ जनवरी १९६० में **'आराधिका राधिका'** शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने अन्य पुराणों में राधा के छिटपुट उल्लेख को स्वीकार करते हुए लिखा है-"आश्चर्य है कि वैष्णवों के वेद श्रीकृष्ण-लीला-ग्रन्थ शिरोमणि श्रीमद्‌भागवत में, राधा के नाम का उल्लेख नहीं है।"

वे लिखती हैं कि वायु पुराण, वराह पुराण, नारदीय पुराण, आदि पुराण आदि में कहीं-कहीं राधा का उल्लेख पाया जाता है। किन्तु राधा-कृष्ण-लीला का सबसे अधिक वर्णन ब्रह्मवैवर्तपुराण में पाया जाता है।

डा० भवानीलाल भारतीय 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' (एक सरल समीक्षा) में लिखते हैं कि इस पुराण की रचना का उद्देश्य यही था कि उस समय के श्रंगारप्रिय कवियों के द्वारा जो कामुक वर्णन कृष्ण और राधा का किया गया उसे धर्म के नाम से उचित ठहराया जा सके। इस पुराण के अनुसार राधा कृष्ण की अधिष्ठात्री शक्ति है। आश्चर्य की बात यह है कि पुराणों के जो नवीन व्याख्याकार राधा कृष्ण के पुराणवर्णित प्रसंगों का समाधान स्वकल्पित युक्तियों के द्वारा करना चाहते हैं वे ऐसा करते समय भूल जाते हैं कि इस पुराण में तो राधा कृष्ण का जो घोर श्रंगारपूर्ण चित्र अंकित किया गया है वह इतना अश्लील, वीभत्स और ग्राम्य (गंवारू) है कि उस पर आध्यात्मिकता, अलौकिकता और दिव्यता का कितना ही मुलम्मा क्यों न चढ़ाया जाय, उससे उसकी वास्तविकता नहीं छिपती।

गोलोक में राधा– इसी पुराण में लिखा गया है कि कृष्ण अपनी पराशक्ति राधा तथा अन्य गोपियों के साथ गोलोक में निवास करते हैं। यह गोलोक वैकुण्ठ (जो विष्णु का लोक है) से पाँच सौ कोटि योजन ऊपर है। पुराणकार के अनुसार कृष्ण एक प्रेमी ही नहीं अपितु लम्पट पुरुष भी हैं जो राधा को पाकर ही सन्तुष्ट नहीं हैं। वे उसकी अन्य सखी

बिरजा के साथ भोग रत रहते हैं ऐसे ही एक समय बिरजा मूर्छित हो गई, उसी समय राधा वहाँ आ गई। कृष्ण तो वहाँ से भाग गये और बिरजा ने अपने योग बल से शरीर को त्याग दिया और नदी का रूप धारण कर लिया। कृष्ण को पर स्त्री में आसक्त देख राधा ने जो कुछ कहा वह देखने योग्य है—**हे कृष्ण! बिरजाकान्त गच्छ मत्पुरतो हरे। कथं दुनोषि मा लोल रतिचोर लम्पट॥** ३/५९

हे बिरजा के प्यारे कृष्ण! मेरे निकट से दूर हो जाओ। हे रति चोर, लम्पट मुझे क्यों कष्ट देते हो। पुनः वह भारत में मनुष्य रूप में जन्म लेने का शाप देती है। वह अपनी सखियों को उसे हटा देने का आदेश देती है, देखें—**निवार्यताम् च धूर्तोऽयं किमस्यात्र प्रयोजनम्॥** ३/६२ इस धूर्त को निकाल दो इससे मेरा क्या मतलब। प्रकृति खण्ड के ११ वें अध्याय में गंगा के साथ प्रेम करते देख वह फटकारती है और चेतावनी देती है —

संगृह्येमा प्रियामिष्टा गोलोकाद् गच्छ लम्पट।

अन्यथा नहि ते भद्रं भविष्यति सुरेश्वर॥ ११/४५

हे लम्पट! अपनी इस प्रिया को लेकर गोलोक से चले जाओ, अन्यथा अच्छा नहीं होगा।

इस विवरण को पढ़कर **पं० वैङ्कटेशनारायण तिवारी** के विचार देखने योग्य हैं—"मृत्यु लोक में जैसे, वैसे ही स्वर्ग लोक में भी सौतों में लड़ाई होती है और एक से अधिक पत्नियों के पति चाहे विष्णु ही हों, उनका जीवन इस सौतियाडाह के कारण कष्टमय हो जाता है।" "गोलोकस्थ परमात्मा श्री कृष्ण की लम्पटता का इतना निश्शङ्क वर्णन पढ़कर मेरी तो बुद्धि चकरा जाती है।"

सुप्रसिद्ध कवि और नाटककार **पण्डित नारायण प्रसाद 'बेताब'** ने **'राधा कृष्ण का नाता'** शीर्षक से एक छोटा सा ट्रैक्ट

लिखा था। उसमें अत्यन्त मनोरंजक शैली में राधा और कृष्ण के परस्पर पिता-पुत्री, माता-पुत्र, पति-पत्नी और भाभी और ननद के पुत्र के सम्बन्ध ब्रह्मवैवर्त पुराण के आधार पर ही सिद्ध किये गये थे। अपने लेख के अन्त में लेखक अत्यन्त विनम्र भाव से भगवान् कृष्ण से पूछते हैं कि कृपा कर बतायें, इनमें से आपका राधा से कौन सा सम्बन्ध था? क्या ये सभी सत्य हैं या सभी असत्य अथवा इनमें से एक सत्य है और तीन असत्य? निष्कर्ष रूप में लेखक ने यही सिद्ध किया है कि राधा का वर्णन और कृष्ण से उसका सम्बन्ध यह सम्पूर्ण प्रसंग ही काल्पनिक है और केवल ब्रह्मवैवर्त में ही इसका उल्लेख है। (श्री कृष्ण चरित- डा. भवानी लाल भारतीय)

डा० रामअवध शास्त्री (अमर उजाला - १५ अगस्त १९८७) **'राधा और उनका स्वरूप'** शीर्षक लेख में लिखते हैं—पुराणों के अनुसार वे समस्त गुणों की खान तथा कृष्ण की सभी प्रियाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं। दुर्गा आदि त्रिगुणमयी देवियाँ उनकी कला के करोड़वें अंश को धारण करती हैं और उनकी चरणों की धूलि के स्पर्श मात्र से करोड़ों विष्णु उत्पन्न होते हैं। देखें—**पद्म पुराण** पाताल खण्ड ६९/११८

तत्प्रिया प्रकृतिस्त्वाद्या राधिका कृष्णवल्लभा।
तत्कलाकोटिकोट्यंशा दुर्गाद्यास्त्रिगुणात्मिका:॥
तस्या पादरज: स्पर्शात् कोटि विष्णु: प्रजायते॥

गीत गोविन्द— गीतिकाव्य के रूप में एक विशेष स्थान रखने वाले इस ग्रन्थ में राधा और कृष्ण के श्रृंगारपूर्ण कामुक वर्णन को पढ़कर कौन कह सकता है कि इस कृति के द्वारा कृष्ण और राधा का यह प्रेम कोई अनुकरणीय संदेश समाज को देता है।

कापि कपोलतले मिलितालपितुं किमपि श्रुतिमूले।
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले॥ ५॥

केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले।
मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले ॥ ६ ॥

अर्थ–'कोई नितम्बवाली गोपरमणी ने कुछ कान में कहने के छल से श्रीकृष्ण के रोमाञ्चित कपोलो को बड़ी ही सुन्दरता से चुम्बन किया। हे राधे! कोई गोपी सुन्दरी यमुना जी के तट पर सुन्दर वेतसलता के निकुञ्ज में केलि करने की इच्छा से श्री कृष्ण के वस्त्र को खींचने लगी।' देखें–सर्ग १ के ५-६ वें श्लोक।

डा० जगदीश प्रसाद (मेरठ कालिज, मेरठ) ने अपने एक लेख **कौन कहता है राधा थी?** (दयानन्द सन्देश- अक्टूबर '८६) में विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में राधा का जो विवरण दिया है उसे संक्षेप में यहाँ दे रहे हैं। महाराष्ट्र में कृष्ण के साथ रुक्मिणी की पूजा होती है। बंगला और मैथिल साहित्य में राधा और कृष्ण का प्रेम सम्बन्धी वर्णन प्राप्त होता है। गुजराती और मलयालम साहित्य में कृष्ण का वर्णन भागवत के अनुसार ही है। आसाम में राधा और कृष्ण के प्रेम में माधुर्य की झलक है तो तमिल साहित्य में विष्णु के अवतार रूप में कृष्ण का उल्लेख है पर वहाँ राधा नहीं है। कन्नड़ साहित्य में राधा का वर्णन एक सामान्य गोपी के सनान है। तेलुगु साहित्य में राधा, गोपी और कृष्ण का श्रृंगारपूर्ण वर्णन तो मिलता है किन्तु वहाँ के शिष्ट साहित्य में इसका अभाव है। उड़िया साहित्य में राधा के जन्म का एक विचित्र विवरण मिलता है। राजा शुकलसेन और उनकी भार्या ने ब्रह्मदेव की कृपा से बारह कन्याओं को प्राप्त किया। अन्तिम कन्या कुरूपा थी। राजा ने एक मंजूषा में बन्द कर उसे नदी में प्रवाहित कर दिया। मंजूषा बहती हुई वृन्दावन में पहुंची तो बृषभानु ने उसे खोलकर एक सुन्दर बालिका को पाया। उसे अपनी पुत्री मान कर पाला और उसका नाम राधा रख दिया। इसी राधा का विवाह कृष्ण के साथ हुआ। इस प्रकार राधा के भक्त उत्कल देश को ही राधा की जन्मभूमि मानते हैं। (इस धारणा में

विचारणीय बात यह है कि ऐसी कौन सी नदी है जो उत्कल से वृन्दावन को आती है।)

राधा कहाँ से आई– **श्री ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम' (श्री प्रेमभिक्षु)** ने **'शुद्ध कृष्णायन'** नामक ग्रन्थ में लिखा है–'हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् **डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने अपनी पुस्तक **'मध्य कालीन धर्म साधना'** में इस पर कुछ प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं कि **'प्रेम विलास'** और **'भक्ति रत्नाकर'** के अनुसार **'नित्यानन्द प्रभु'** (बंगाल के चैतन्य के सहकारी) की छोटी पत्नी जान्हवी देवी जब वृन्दावन गयीं तो उन्हें यह देखकर बड़ा दु:ख हुआ कि श्री कृष्ण के साथ राधा की मूर्ति की कहीं पूजा नहीं होती थी। घर लौटकर उन्होंने नरायन भास्कर नामक कलाकार से राधा की मूर्ति बनवाई और उसे वृन्दावन भिजवाया। जीव गोस्वामी की आज्ञा से श्रीकृष्ण के पार्श्व में रखी गई और तब से श्री कृष्ण के साथ राधा की पूजा होने लगी। इससे सिद्ध है कि ब्रज में भी, जो कृष्ण की जन्म भूमि है, राधा की कृष्ण के साथ पूजा लगभग ४०० वर्ष पूर्व, जो चैतन्य के जीवन काल का समय है, प्रचलित नहीं हुई थी। इसकी कल्पना ब्रह्मवैवर्त पुराणकार के कामुक मस्तिष्क की उपज है। (पृष्ठ १५७)। इस प्रकार राधा की कल्पना पहले बंगाल में हो चुकी थी।

ब्रह्मवैवर्त पुराण – कृष्ण के प्रेम प्रसंग का जो वर्णन 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में प्राप्त होता है वह इतना अश्लील और कामुक है कि सुनने-सुनाने लायक नहीं है। राधा के साथ कृष्ण के कितने रिश्ते हैं वे भी इस पुराण में देखने योग्य हैं। एक राधा ही क्या बिरजा और कुब्जा के साथ भी कृष्ण के अनैतिक अंतरंग सम्बन्ध लिखे गये हैं। सम्भवत: इसी आशय से महिलाओं को गाते सुना जाता है–'घर की नारी छोड़ कृष्ण तोहे कुब्जा मन भाई।'

राधा कृष्ण की पुत्री– ब्रह्मखण्ड के पाँचवें अध्याय में राधा की

उत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है—

आविर्बभूव कन्यैका कृष्णस्य वामपार्श्वत:॥ २५॥

तेन राधा समाख्याता पुराविद्भिर्श्वजोत्तम ॥२६॥

अर्थात् कृष्ण के वामपार्श्व से एक कन्या उत्पन्न हुई, पुराकल्प को जानने वाले ब्राह्मणों ने उसे राधा नाम दिया। अगले श्लोक में उसे कृष्ण की प्राणाधिष्ठात्री देवी कहा गया है और उसे कृष्ण के प्राणों से उत्पन्न बताया है—

प्राणाधिष्ठात्री देवी सा कृष्णस्य परमात्मन:।

आविर्बभूव प्राणेभ्य: प्राणोभ्योऽपि गरीयसी॥ २७॥

यहाँ पुराणकार यह भी भूल गया कि वामपार्श्व और प्राणों को एक ही नहीं कहा जा सकता।

यही राधा जो गोलोक में कृष्ण की शाश्वत सङ्गिनी के रूप में रहती है, श्री दामा के शाप के कारण मृत्युलोक में बृषभानु गोप की पुत्री के रूप में अवतीर्ण हुई। यहाँ उसकी माता का नाम कलावती था—

बृषभानु सुता सा च माता तस्या: कलावती॥ कृष्ण. पू. १३/९२

यहाँ भी उसे कृष्ण के अर्द्धांश से उत्पन्न कहा गया है।

श्रीकृष्णार्धांशसंभूता तेन तुल्या च तेजसा॥ कृष्ण. पू. १७/२९

यही बात अन्यत्र भी श्रीकृष्ण जन्म खण्ड पूर्वार्द्ध अध्याय १७/२२९, अध्याय ४१/७२, उत्तरार्द्ध अध्याय १२४/९४ में भी दुहराई गई है। पुत्री को अङ्गजा ही कहते हैं। इस प्रकार राधा कृष्ण के अङ्ग से उत्पन्न होने के कारण उनकी पुत्री हुई।

राधा कृष्ण की पत्नी—प्रकृति खण्ड के ४८ वें अध्याय में महादेव राधा को कृष्ण की पत्नी कहते हैं—"स्वयं राधा कृष्ण पत्नी कृष्णवक्ष: स्थलास्थिता॥ कृष्ण जन्म खण्ड पू. अध्याय १५ में राधा

और कृष्ण के विवाह का विस्तृत वर्णन है। जिसमें पणिग्रहण संस्कार की सारी विधियों का उल्लेख है। इस प्रकार राधा कृष्ण की पत्नी ठहरती है।

राधा कृष्ण की मामी– प्रकृति खण्ड अध्याय ४९ में निम्न श्लोक मिलते हैं–

राधा जगाम वाराहे गोकुलं भारतं सती।

बृषभानोश्च वैशस्य सा च कन्या बभूव हा॥ ३५॥

वाराह कल्प में राधा गोकुल में गई और वहाँ बृषभानु की कन्या बनी।

अतीते द्वादशाब्दे तु दृष्ट्वा तां नवयौवनाम्।

सार्द्ध रायण वैश्येन तत्संबन्धं चकार स॥ ३७॥

जब वह बारह वर्ष की होकर यौवन को प्राप्त हुई तो रायण वैश्य के साथ उसका सम्बन्ध कर दिया गया। यह रायण कौन था?

कृष्णमातुर्यशोदाया रायणस्तत्सहोदर:।

गोलोके गोपकृष्णांश: सम्बन्धाकृष्णमातुल:॥ ४०॥

कृष्ण की माता यशोदा का भाई रायण था, जो गोलोक में तो कृष्ण का ही अंशभूत एक गोप था, परन्तु यहाँ मर्त्यलोक में कृष्ण का मामा था। इस प्रकार राधा स्वयं कृष्ण और उनके मामा रायण दोनों की पत्नी सिद्ध होती है। यहाँ पुराणकार एक चालाकी भरे प्रसंग को जन्म देता है। वह कहता है कि असली राधा तो कृष्ण के पास ही रही, रायण का विवाह तो छाया राधा के साथ हुआ। देखें–

स्वयं राधा हरै: क्रोडे छाया रायण मन्दिरे॥ ४२॥

अन्य स्थानों पर भी यही बात कृष्ण और राधा के मुख से भी कहलवाई गई है। इस छलपूर्ण कृत्य का आरोप तो कृष्ण पर भी आता

है। प्रथम तो रायण के साथ धोखा हुआ इसके परिणाम स्वरूप बेचारा राणय किस प्रकार इस छाया के साथ दाम्पत्य जीवन बितायेगा।

राधा-कृष्ण का एक और सम्बन्ध– यह प्रकरण अधिक विस्तार चाहता है अतः हम यहाँ उसका सार संक्षेप ही डा. भवानीलाल भारतीय के ही शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं– "राधा और कृष्ण को अन्य विचित्र स्थिति में भी पुराणकार ने चित्रित किया है। उस समय कृष्ण छोटे बालक ही थे। एक बार नन्द उन्हें लेकर भाण्डोर वन में गोचारण के लिए गये। वहाँ अचानक ही आकाश मेघावृत्त होगया और झण्झावात का शब्द सुनाई पड़ने लगा। मूसलाधार वृष्टि भी होने लगी, तब नन्द को यह चिन्ता हुई कि बालक कृष्ण को सुरक्षित रूप से घर तक कैसे पहुँचाया जाय। अचानक राधा वहाँ आ पहुँची। नन्द ने रोते हुए बाल कृष्ण को राधा को दे दिया। राधा कृष्ण को लेकर चली गई। अब विचार की बात यह है कि राधा पूर्ण यौवन सम्पन्न युवती है और कृष्ण उसकी गोद में पुत्र के तुल्य हैं। क्या यह माता और पुंत्र का सा सम्बन्ध नहीं है? परन्तु पुराणकार को इतना लिखकर ही सन्तोष नहीं हुआ। उसने आगे जो कुछ लिखा उसका सार यह है।

राधा ने कृष्ण को गोद लेकर काम वासना का अनुभव किया। उसका शरीर रतिभाव के उत्पन्न होने से कंटकित हो गया। तुरन्त उसने रासमण्डप को स्मरण किया। जिसके फलस्वरूप एक रासमण्डप स्वतः ही बन गया और उसमें सभी प्रकार की वासनोत्तेजक सामग्रियाँ उपस्थित हो गईं। बालक कृष्ण भी एक परम रूपवान् नवयुवक के रूप में परिवर्तित हो गये और उसके पश्चात् ....जो कुछ होना था वही हुआ। यहाँ पुराणकार खुल कर खेला है। राधा-कृष्ण का जो सम्भोग वर्णन इस पुराण में मिलता है वह अपनी अश्लीलता और ग्राम्य वर्णनों की दृष्टि से अद्वितीय है। **जो लोग ऐसे-ऐसे गर्हित और शिष्ट रुचि के प्रतिकूल वर्णनों को पुराणों में देखते हुए भी पुराणों के**

व्यासकृत होने का आग्रह करते हैं, उनकी बुद्धि पर तरस आता है। ब्रह्मवैवर्त में तो ऐसे वर्णनों की बाढ़ ही आ गई है।

इसी अध्याय के कुछ अंश नमूने के लिए प्रस्तुत हैं—

करे धृत्वा च तां कृष्णः स्थापयामास वक्षसि।

चकार शिथिलं वस्त्रं चुम्बनं च चतुर्विधम्॥ १४८॥

कृष्ण ने राधा को हाथ से पकड़ कर उसका चतुर्विध चुम्बन लिया।

बभूव रति युद्धेन विच्छिन्ना क्षुद्रघण्टिका।

चुम्बनेनोष्ठं रागश्च ह्याश्लेषेण च पत्रकम्॥ १४९॥

जो रतियुद्ध हुआ उससे करधनी टूट गई। चुम्बन से अधरों का रंग उड़ गया और आलिंगन से पत्रावली नष्ट होगई।

मूर्छामवापि सा राधा बुबुधेन दिवानिशम्। १५१॥

नवसंगम से राधा मूर्छित हो गई और रात दिन तक उसे होश नहीं आया। शृङ्गाराष्टविधं कृष्णश्चकार कामशास्त्रवित्॥ १५२॥

कामशास्त्र के जानने वाले कृष्ण ने आठ प्रकार का शृङ्गार किया। (पाठक नोट करें ब्रह्मवैवर्त के कृष्ण कामशास्त्र के आचार्य हैं। फिर भला वे हमारे आदर्श कैसे हो सकते हैं)

सम्भोग के अनन्तर कृष्ण ने पुनः शिशु रूप धारण कर लिया। उसी बालक को पुनः अपने अंक में लेकर राधा यशोदा के निकट गई और बोली—"गृहाण बालकं भद्रे स्तनं दत्वा प्रबोधय"॥ १७५॥

हे कल्याणी! अपने बालक को लो और स्तन्यपान करा कर सावधान करो।

राधा ने कृष्ण को रोते हुए बालक के रूप में नन्द से लिया और इसी रूप में यशोदा को दिया, इस अवधि के बीच में एक विचित्र

संभोग काण्ड भी घटित हो गया। अब पाठक स्वयं ही समझ सकते हैं कि पुराणकार हमें क्या शिक्षा देना चाहता है।

राधा के आचार शास्त्र का एक दर्शन और भी पुराणकार प्रस्तुत करता है। देखें– जब राधा को इस बात का ज्ञान हुआ कि ब्रह्मा ने कामार्ता मोहिनी को त्याग दिया है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ ... उसने अपने नवीन आचार शास्त्र का एक सूत्र प्रस्तुत किया–

उपस्थितायास्त्यागे महान्दोषो हि योषितः॥ ३५/२८

'संभोग के लिए उपस्थित स्त्री का त्याग महान दोष है।'

इससे बढ़कर व्यभिचार की शिक्षा और क्या होगी और यह कथन भी उर्वशी, तिलोत्तमा, रम्भा जैसी किसी गणिका का न होकर उस राधा का है जो पौराणिक बन्धुओं के लिए कृष्ण प्रिया होने के कारण माता के तुल्य है, आद्या शक्ति है तथा जिसकी प्रत्येक आज्ञा उनके लिए अनुकरणीय है।

राधा का तांत्रिक रूप– पुराणों के रचनाकाल के समय वाम मार्ग भी प्रचलित था। अतः तांत्रिक प्रभाव से युक्त रहना राधा के लिए भी अवश्यम्भावी था। प्रकृति खण्ड अध्याय संख्या ५६ में राधा सम्बन्धी कुछ मन्त्र मिलते हैं उनका तांत्रिक स्वरूप स्पष्ट है। उदाहरण के लिए

ओं ह्रीं श्रीं राधिकां ङेन्तं वह्निजायान्तमेव च॥ ३३॥

ओं ह्रीं श्रीं राधिकायै वह्निजायान्तमेव च॥ ३४॥

ओं रां राधां चतुर्थ्यंन्तं वह्निजायान्तमेव च॥ ३५॥

क्लीं ह्रीं कृष्णप्रियां ङेन्तं कण्ठं पातु नमोन्तकम्॥ ३६॥

उपर्युक्त मन्त्रों में ह्रीं, श्रीं आदि जो अर्थहीन शब्द प्रयुक्त हुए हैं वे तन्त्रों के ही अनुकरण पर है। वस्तुतः तांत्रिक मन्त्रों में केवल शाब्दिक घटाटोप उत्पन्न करने के लिए ही इस प्रकार के निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है। (ब्रह्मवैवर्त पुराण (एक सरल समीक्षा) से साभार।

डा० श्रीराम आर्य –'पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि भागवत के बनने तक राधा की कल्पना नहीं की गई थी, किन्तु बाद में बने पुराणों में कृष्ण के चरित्र को कलंकित करने के लिए उनके साथ एक प्रेमिका की झूंठी कल्पना दुष्ट लोगों द्वारा की गई और उसका नाम राधा रख दिया गया। ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड ४ अध्याय १५ में राधा का कृष्ण के साथ अनुचित प्रेम सम्बन्ध विषयभोग का विवरण विस्तृत रूप से दिया गया है। इस प्रसंग में डा. साहब लिखते हैं कि भोग के उपरान्त राधा आनन्द से मूर्छित होगई और एक दिन व एक रात तक बेहोश पड़ी रही तब तक कृष्ण भी जवान बने उसके पास रहे। इतना काण्ड हो गया, पर न तो राधा के घर वालों ने उसे देखा और न यशोदा को इस घटना का कुछ पता चला। उसने भी २४ घण्टों के बीच यह जानने की कोशिश नहीं की कि उसका बालक कहाँ है? वह भूखा है या प्यासा है? पुराणकार ने कृष्ण को कामशास्त्र का विशेषज्ञ उस अवस्था में बताया है जब वे दूध पीने वाले मासूम बच्चे थे। पुराणकार का यह आशय है कि जब अबोध बालकपन में कृष्ण जी इतने चतुर थे तो बड़े होने पर तो उन्हें इस विद्या में सर्वगुण सम्पन्न होना ही चाहिए। (देखें-पृष्ठ ४-१०)

इसी पुस्तक में पृष्ठ १३ पर डा. साहब अपनी वेदना स्पष्ट करते हैं–श्रीकृष्ण जैसे महान् पुरुष के बारे में यह कहना कि उनका व्यभिचार का सम्बन्ध रायण वैश्य की पत्नी राधा से था, श्रीकृष्ण जी को व्यभिचारी बताना है। श्रीकृष्ण के नाम के साथ राधा का नाम जोड़ना, राधेकृष्ण या राधेगोविन्द कहना, कृष्ण के उज्ज्वल निष्कलंक पावन चरित्र पर पर-स्त्री गमन का भयङ्कर अमिट कलंक का लगाना है। पर हमारे पौराणिक भक्त लोग इस बात की कसम खा चुके हैं कि वे कृष्ण को निष्कलंक नहीं रहने देंगे। वे चिल्ला-चिल्ला कर, ढोल बजा कर, नाच-गा कर कृष्ण को व्यभिचारी बताते फिरते हैं।

क्या कृष्ण दुराचारी थे?– महाभारत के अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि कृष्ण किसी भी अंश में दुराचारी नहीं थे। इसका प्रमाण हम महाभारत के सभापर्व से देते हैं।जब युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ हुआ तो सभी राजा-महाराजाओं ने अग्रपूजा के लिए कृष्ण को चुना। इस पूजा से शिशुपाल का विरोध होना स्वाभाविक था। इस अवसर पर शिशुपाल ने कृष्ण के विरुद्ध जितना विष उगला उससे प्रमाणित होता है कि कृष्ण पर लगाये गये वे लांक्षन जो पुराणकारों और तथाकथित कृष्णभक्त कवियों ने लगाये वे सत्य नहीं हैं। शिशुपाल ने कृष्ण के विरुद्ध बहुत से आरोप लगाये किन्तु उनके चरित्र के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा। इससे बड़ा और प्रमाण क्या हो सकता है कि कृष्ण का घोर शत्रु भी उनके चरित्र को दूषित नहीं कहता। यदि ऐसा होता तो शिशुपाल चूकने वाला नहीं था।

अनेक मत मतान्तरों और सम्प्रदायों के उदय के साथ-साथ ही यह धारणा विकसित होती गई कि कृष्ण के साथ राधा नाम की कोई प्रेमिका थी। इसके प्रचार के पीछे कथावाचकों और रासमण्डलियों का विशेष हाथ है। उनके इस कृत्य से मनोरंजन तो होता है किन्तु कृष्ण के चरित्र पर जो दाग लगता है उससे कौन से धर्म का प्रचार होता है?

रुक्मिणी-पति कृष्ण जैसे पावन-चरित्र व्यक्ति के साथ काल्पनिक चरित्र राधा को लगाना क्या अन्याय नहीं है? महापुरुषों पर लगे असत्य आरोपों का निराकरण करना श्रेयस्कर है या नित्य प्रति अनेक झूठी कहानियाँ गढ़ कर उन्हें कलंकित करते रहना। निष्कलंक महापुरुषों को अपनी कुत्सित कामनाओं से कलंकित करना कहाँ की बुद्धिमानी है।

राधा के विषय में रहस्य यही है कि उसका अस्तित्व वास्तविक न होकर काल्पनिक ही ठहरता है। फिर भी उसे वास्तविक माना जा रहा है। कृष्ण के जीवन में राधा नाम की किसी प्रेयसी का अस्तित्व मानना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

***